

जन्मिन् (von जन्मन्) m. *Geschöpf, Mensch* AK. 1, 1, 4, 8. PĀNKAT. I, 110. II, 96.

जन्मेत्रय m. = जन्मेत्रय BHĀG. P. im ÇKDra. Verz. d. Oxf. H. 24, b. जन्मेष (जन्मन् + ईश) m. = जन्मप VARĀH. Bṛh. 15, 3.

1. जन्य (von जन्) 1) adj. *was erzeugt —, hervorgebracht wird* P. 3, 4, 68. PAT. zu P. 3, 1, 97. VOP. 26, 7. H. an. 2, 361. MED. j. 24. sg. जन्यो जनकः कालः BHĀSHĀP. 44. जनकस्य स्वभावो हि जन्ये तिष्ठति निश्चितम् BRAHMAYAIV. P. im ÇKDra. H. 5. Häufig am Ende eines comp. *ent-springend —, hervorgehend aus:* श्रग्मिसंयोगं TAKASAMGR. 18, 23. Çīc. 9, 35. BĀLAB. 8. BHĀSHĀP. 110. Sch. zu KAP. 1, 19, 51. Sāh. D. 2, 2. 29, 11. कर्मजन्यता VEDĀNTAS. (Allah.) No. 11. दुष्टकारपाण्यत्वं Sch. zu KAP. 1, 80. — 2) adj. *erzeugend;* m. *Vater* H. an. MED. — 3) n. a) *Körper:* तु-ष्टव जन्यं विसूज्जन्मार्दनम् BHĀG. P. 4, 9, 31. — b) *a portent, one occurring at birth* KSHIRASV. zu AK. WILS. — Vgl. श्रजन्य.

2. जन्य (von जन्) 1) adj. a) *gentilis, zum Stamm, Geschlecht u. s. w. gehörig, von demselben herrührend, landsmännisch:* ज्ञाषि ब्रह्म जन्यं ज्ञाषि सुषुतिम् RV. 2, 37, 6. जनं जन्ये नाति मन्यते विश आ देति विश्येऽविशम् 10, 91, 2. जन्यं भयमन्यजन्यं च ÇĀNKH. Çā. 5, 13, 3. als Beiw. Çīva's MBh. 13, 1170. — b) *vulgaris, von den Leuten (von Fremden) herrührend, denselben gehörig u. s. w.:* पापतिर्ज्ञायदंहेतो नो मित्रा मित्रियाङ्गुत न उहृष्टेत् RV. 4, 55, 5. यथा गावे इहागमन्। जन्याम उपं नो ग्रुलम् 9, 49, 2. यः कामयेतोप मा जन्या गावो नमयुर्विन्देत मे जन्या गा राष्ट्रम् PĀNKAV. Br. 6, 10, 17, 1. SHĀPV. Br. 1, 7. जन्यमन्वमयात् TBR. 1, 3, 10, 6. — 2) m. a) (*eig. Landsmann*) *Begleiter des Bräutigams, Brautführer* AK. 2, 7, 57. H. 517. an. 2, 361 (जामातृवत्सले, नवोठानुचरादिषु). MED. j. 23. sg. (वरक्षिष्य, नवोठानातिभृत्योः). क श्वसं जन्याः क वृः AV. 11, 8, 1. सङ्क कृवानो जन्यो न प्रम्बा RV. 4, 38, 6. जन्यार्थमन्वे नुपरेन राजा विवाहद्वेष्टोरुपमंस्कृतं च MBh. 1, 7203. जन्याशास्त्रुरास्तदा 3, 11053 (S. 371). — b) *der gemeinsame Mann:* शध्यु, रजन्य, वैश्य, जन्य TBR. 1, 7, 8, 7. य एव विदानापि जन्येषु भवति TS. 6, 1, 6, 6. GOBH. 2, 1, 12. — 3) f. श्रा गाना उत्करादि zu P. 4, 2, 90. a) *Brautführerin* P. 4, 4, 82. RAGH. 6, 30. = जामातृवर्यस्या P., Sch. = मातृसवी, मातृवर्यस्या H. an. MED. — b) *Freude* H. an. ÇABDAR. bei WILS. — 4) n. a) *Leute; Gemeinde, Volksstamm:* ग्रत्वर्ज्ञम् ईसे विद्वा जन्मेभाया कवे। द्रूतो जन्येव मित्रः RV. 2, 6, 7, 39, 1. श्राद्धाच्चित्सन्नेतामस्य शत्रुन्यम्मै युजा जन्या नमताम् 10, 42, 6. यद्वा कृष्णेष्वाधीर्घद्वा वर्षसि भद्रया यद्वा जन्यमवीकृथः (mit abweichendem Accent) AV. 13, 4, 43. *feindliche Geschlechter oder Häuser:* सपत्ना वै द्विषतो धातृव्या जन्यानि AIT. Br. 8, 26. जन्य = जन Kāc. zu P. 5, 4, 30. — b) *feindliches Zusammenstoßen von Menschen, Kampf, Schlacht* Uṇ. 4, 112 (oxyt.). AK. 2, 8, 2, 72. TRIK. 3, 312. H. 796. H. an. MED. कृता कुद्रम्य-हाजन्ये MBh. 5, 3195. तत्र जन्यं रथोर्धेरं पार्वतीपैर्गणैरभूत् RAGH. 4, 77. DAÇAK. 3, 16, 4, 11, 96, 3. — c) *Marktplatz (Tummelplatz von Menschen)* TRAIK. 2, 1, 20, 3, 3, 312. H. an. MED. (lies द्वृते st. कृदे). — d) *das Gerede der Leute, Geklatsch* P. 4, 4, 97 (ohne Angabe des Geschlechts, nach dem Sch. m.). AK. 3, 4, 24, 161. 24, 81. H. an. MED. — Vgl. प्रतिजन्य, विश्वः.

जन्यीय adj. von जन्या गाना उत्करादि zu P. 4, 2, 90. Oder ist etwa nach P. 6, 4, 150 जन्यीय zu bilden?

जन्यु (von जन्) m. 1) *Geburt* (?) अमृताया द्वितीयो ऽपं जन्युर्हि मम सर्वथा HARIV. 7092. — 2) *Geschöpf* Uṇ. 3, 20. AK. 1, 1, 4, 8. H. 1366. an. 2, 362. MED. j. 26. — 3) *Feuer* H. an. MED. — 4) *Bein*. Brahman's dies. — 5) N. pr. eines der 7 Weisen im 4ten Manvantara HARIV. 426 (जन्यु LANGL.).

जप्, जपैति DHĀTUP. 11, 3. जपाप; जस्ता und जपिता, जप und जपित VOP. 26, 103, 104. 1) *halblaut —, flisternd hersagen, herumurmeln (Gebete):* कौतृजपम् उपांशु AIT. BR. 2, 38. श्रियमीत्तमाणो जपति ÇAT. BR. 1, 5, 1, 26, 2, 4, 2, 22. शृचम्, पञ्चः 1, 7, 4, 20, 21. 13, 8, 4, 7, 9, 2, 2, 1. LĀT. 1, 7, 5, 10, 4. KĀT. Çā. 2, 3, 29, 6, 13, 3, 4, 16. KAUÇ. 42. M. 2, 78, 101, 102. 181 u. s. w. MBH. 1, 2777. 3, 1733. 14, 450. 14, 2244. R. 1, 25, 3, 20. SUÇR. 1, 111, 11. VID. 84. BHĀG. P. 3, 14, 31. लृरिरिति जपति सकामम् GIT. 4, 16. जपतो चाः *unter den stillen Betern* MBH. 12, 9339. med. जपेरु ÇĀNKH. Çā. 3, 6, 4. जपते MBH. 3, 10905. 13, 750. जपितम् 12, 7336. जस्ता M. 11, 249, 250, 256. R. 1, 2, 10. जपिता M. 11, 194, 251, 259. VET. 18, 6. जप MBH. 5, 7047. NAISH. 11, 26. जपित MBH. 12, 7248. — 2) *beiflistern, mit halblauter Stimme besprechen:* श्रो हि छा तिसृभिर्हरयर्वर्णति च तस्मिन्नितम्। कार्पासिकं वस्त्रयुगं बिभृत्यत्सातो नराधिपतिः || VARĀH. BRH. S. 47, 72. — 3) *halblaut ein Gebet an Jmd (acc.) richten:* जपते जप्यते चैव (शिवः) MBH. 13, 730. — 4) *halblaut Jmd anrufen, nennen, mit dem acc.: मामेव ते जपियाते जपते मां च नित्यशः* BHĀG. P. in Verz. d. Oxf. H. 33, a, 19. यदि रचितयिषं माविष्यलोको ऽपविद्वं जपति न गणये तत् BHĀG. P. 4, 7, 29. — intens. जप्तयते, जप्तयोति P. 7, 4, 86. VOP. 20, 8. शनैरितिरो जप्तयमान श्वान्वालृ ÇAT. BR. 11, 5, 5, 10. Nach P. 3, 1, 24 und VOP. 20, 2 *einen Tadel einschliessend.* — Vgl. जल्प्.

— श्रुतुं *nachher murmelnd hersagen:* मत्वम् ÇĀNKH. Çā. 3, 20, 17, 18. LĀT. 1, 10, 7. BHĀG. P. 5, 18, 29. शृचः LĀT. 9, 10, 7.

— श्रमि *beiflistern, besprechen:* श्रोषीम् — चकार रक्तो कौशल्या मैत्रिर्जिताप च R. 2, 23, 36.

— श्रा *hineinflistern:* दक्षिणो कर्णे ÇAT. BR. 4, 5, 8, 10, 13, 4, 2, 15.

— उप 1) *Jmd zuraunen:* श्रोत्रमूले चोपोपुर्वदैः R. 1, 9, 38. तत्तारं कुरुराजस्तु शैनैः कर्णमुपाजपत् MBH. 4, 22, 16. — 2) *Jmd durch Zuflistungen auf seine Seite bringen:* उपजप्तयाऽपुजपत् M. 7, 197. MBH. 12, 2633. DAÇAK. 193, 12. उपजपत् HARIV. 4221. R. 6, 89, 10. PRAB. 33, 9. — Vgl. उपजप्त्य, उपजाप sg.

— परि *beiflistern, besprechen:* लविष्यमवं प्रथमं परिजपितं भुजीत GOBH. 2, 3, 16, 4, 5, 16. शृग्मिरेतामि! | परिजपते वैजपिकं नवं विद्ययादृक्-कारम् || VARĀH. BRH. S. 47, 74.

— प्र *herflistern:* गापत्रीम् MBH. 3, 13432. RUDRAJĀM. in Verz. d. Oxf. H. 88, a.

— प्रति *erwiedernd flistern:* प्रतिजपत्योमित्यज्ञैः GOBH. 1, 3, 24.

— सम् *ausplaudern, weitererzählen:* न च संदृशने किंचित्प्रवृत्तमपि संजपेत् MBH. 4, 111. *mittheilen:* प्रतिकूलं न संजपेत् MĀRK. P. 34, 33.

जप (von जप्) 1) adj. *flisternd, raunend;* s. जपता, कर्णजप, कुजप. — 2) m. *parox.* ÇAT. BR. oxyt. गाना उत्कादि zu P. 6, 1, 160. *das flisternde Aufsagen eines Gebetes, Liedes u. s. w.:* *ein auf diese Weise hergesagtes Gebet* P. 3, 3, 61. AK. 2, 7, 46. H. 842. कौतृ० AIT. BR. 2, 38. NIR. 7, 31. ÇAT. BR. 2, 4, 2, 9. ÇĀNKH. Çā. 1, 18, 38. 9, 25, 2. देवस्य लेति पुरस्त्वाज्जपः